E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2022; 4(1): 401-404
Received: 25-02-2022
Accepted: 29-03-2022

Kirti Kumari
Research Scholar,
Department of History,
Malwanchal University,
Indore, Madhya Pradesh,
India

Dr. Rathod Duryodhan Devisingh
Supervisor, Professor,
Department of History,
Malwanchal University,
Indore, Madhya Pradesh,
India

Corresponding Author:
Kirti Kumari
Research Scholar,
Department of History,
Malwanchal University,
Indore, Madhya Pradesh,
India

आधुनिक भारत में स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: एक अध्ययन

Kirti Kumari and Rathod Duryodhan Devisingh

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2022.v4.i1e.1703

सारांश
स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आधुनिक भारत की राष्ट्रीय चेतना का प्राणतत्व है, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और मानवता की सेवा को राष्ट्रनिर्माण का आधार माना। 19वीं शताब्दी के औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य में जब भारतीय समाज सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संकटों से गुजर रहा था, तब विवेकानंद ने वेदांत और भारतीय आध्यात्मिक परंपरा को नए रूप में प्रस्तुत कर भारत को आत्मविश्वास और आत्मगौरव का संदेश दिया। उनके विचारों में राष्ट्र केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण, शिक्षा का प्रसार, सामाजिक समरसता और युवाओं की सक्रिय भागीदारी से निर्मित एक समग्र दृष्टि थी। उन्होंने सेवा, संगठन और आत्मबल को राष्ट्रीय उत्थान के प्रमुख साधन माना। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज के भारत तक, उनके विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को निरंतर दिशा प्रदान की है। वैश्वीकरण और सांस्कृतिक चुनौतियों के वर्तमान समय में विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारत की मौलिक पहचान और एकता का सशक्त मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

शब्द-कुंजी : स्वामी विवेकानंद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, वैश्वीकरण और सांस्कृतिक चुनौति

प्रस्तावना
आधुनिक भारत के राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रवाद के उदय में स्वामी विवेकानंद का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी है। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा को आधार बनाकर जिस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा प्रस्तुत की, वह आज भी भारत की आत्मा और राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतिनिधित्व करती है। 19वीं शताब्दी में जब भारत औपनिवेशिक दासता, सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक हीनभावना से जूझ रहा था, उस समय विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की सार्वभौमिकता को पुनः स्थापित कर राष्ट्र को आत्मगौरव और आत्मविश्वास का संदेश दिया। उनके विचारों में राष्ट्र का स्वरूप केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि वह समाज, संस्कृति, शिक्षा, धर्म और अध्यात्म के समन्वय से निर्मित एक व्यापक दृष्टिकोण था। उन्होंने 'नर सेवा ही नारायण सेवा' और 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको' जैसे संदेश देकर समाज को कर्म, आत्मबल और संगठन की शक्ति का महत्व समझाया। उनके सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में भारतीय संस्कृति की गहन आध्यात्मिकता, वेदांत का सार्वभौमिक संदेश और मानवता की सेवा की भावना निहित थी, जो भारत को एक सशक्त, समरस और एकीकृत राष्ट्र बनाने की ओर अग्रसर करती थी। विवेकानंद का मानना था कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी आध्यात्मिक धरोहर और सांस्कृतिक मूल्य प्रणाली में निहित है, जिसे जागृत कर ही भारत विश्व में पुनः अपने स्थान को प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि उन्होंने युवाओं को राष्ट्रनिर्माण का आधार मानते हुए उन्हें शिक्षा, आत्मबल और सेवा के आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित किया। उनके विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम के अनेक नेताओं को प्रेरणा दी और भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव को दृढ़ बनाया। आज के समय में जब भारत वैश्वीकरण, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब विवेकानंद के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अध्ययन और भी प्रासंगिक हो जाता है, क्योंकि यह राष्ट्र को अपनी मौलिक पहचान और आत्मबोध से जोड़कर आधुनिक विकास की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आधुनिक भारत के निर्माण और राष्ट्रीय चेतना के संवर्धन में एक सशक्त आधार प्रदान करता है।

शोध की आवश्यकता
आधुनिक भारत में स्वामी विवेकानंद के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर शोध की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि आज राष्ट्र वैश्वीकरण, सांस्कृतिक विघटन, नैतिक मूल्यों के ह्रास और सामाजिक असमानताओं जैसी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय संस्कृति और अध्यात्म पर आधारित है, जो राष्ट्र को आत्मगौरव, आत्मबल और एकता का संदेश देता है। उनके विचार राजनीतिक स्वतंत्रता से आगे बढ़कर शिक्षा, समाज सुधार, सेवा और मानवता की भावना को राष्ट्रीय जीवन का आधार मानते हैं।

आज के दौर में जब युवा पीढ़ी पाश्चात्य उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होती जा रही है, तब विवेकानंद के विचार उन्हें पुनः भारतीयता की पहचान से जोड़ सकते हैं। शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आधुनिक भारत की सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और नैतिक उत्थान का सशक्त आधार बन सकता है। अतः इस विषय पर अध्ययन वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा: अर्थ और परिभाषा

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद वह वैचारिक दृष्टिकोण है जिसमें राष्ट्र की अस्मिता और एकता का आधार उसकी संस्कृति, परंपराएँ, मूल्य, भाषा, धर्म और ऐतिहासिक चेतना को माना जाता है। इसका मूल भाव यह है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक पहचान केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं, राजनीतिक सत्ता या आर्थिक संसाधनों में नहीं होती, बल्कि उसके सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों और सभ्यतागत धरोहर में निहित होती है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद राष्ट्र के नागरिकों को एक साझा सांस्कृतिक विरासत और जीवनदृष्टि के सूत्र में बाँधता है तथा उन्हें आत्मगौरव, आत्मसम्मान और राष्ट्रीय एकता की भावना से ओतप्रोत करता है । इस अवधारणा के अंतर्गत राष्ट्र केवल भौतिक सत्ता न होकर एक सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक बन जाता है, जिसमें आध्यात्मिक मूल्यों, नैतिक आदर्शों और सामाजिक समरसता का विशेष महत्व होता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जड़ें प्राचीन वेदांत, उपनिषद और गीता की शिक्षाओं में दिखाई देती हैं, जहाँ धर्म, कर्तव्य और मानवता को राष्ट्रीय जीवन का आधार माना गया। यह अवधारणा इस तथ्य को रेखांकित करती है कि विविधताओं से भरे भारतीय समाज में एकात्मता की भावना केवल साझा सांस्कृतिक धरोहर और अध्यात्मिक दृष्टिकोण से ही संभव है। इसलिए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद न केवल अतीत की स्मृति है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक शक्ति है, जो समाज को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए आधुनिकता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करता है। इस प्रकार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की परिभाषा में राष्ट्र की आत्मा और उसकी सांस्कृतिक चेतना का समन्वय ही प्रमुख तत्व माना जाता है।

भारतीय राष्ट्रवाद के विभिन्न स्वरूप (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)

भारतीय राष्ट्रवाद एक बहुआयामी अवधारणा है, जो विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में विकसित हुआ और जिसने स्वतंत्रता संग्राम तथा राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया को दिशा प्रदान की। इसका पहला स्वरूप राजनीतिक राष्ट्रवाद है, जिसका उदय 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध हुआ। राजनीतिक राष्ट्रवाद ने स्वराज्य, स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों को लक्ष्य बनाकर जनांदोलनों, कांग्रेस की गतिविधियों तथा क्रांतिकारी आंदोलनों के माध्यम से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। दूसरा स्वरूप है सामाजिक राष्ट्रवाद, जो भारतीय समाज की आंतरिक कुरीतियों, अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव, स्त्री-असमानता और धार्मिक अंधविश्वासों के विरोध में प्रकट हुआ। इस राष्ट्रवाद ने सुधार आंदोलनों, शिक्षा प्रसार और समाज सुधारकों (राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, महात्मा गांधी आदि) के प्रयासों से समाज में जागृति लाई और राष्ट्रीय एकता के लिए सामाजिक समरसता को आवश्यक माना। तीसरा स्वरूप है सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, जिसका आधार भारतीय सभ्यता, अध्यात्म, धर्म और सांस्कृतिक परंपराएँ हैं। इस स्वरूप ने यह संदेश दिया कि भारत की आत्मा उसकी संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना में निहित है, जिसे जागृत करके ही राष्ट्र को सशक्त और संगठित किया जा सकता है । सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने विविधता में एकता, सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता और मानवीय मूल्यों को राष्ट्रीय जीवन का आधार माना । इन तीनों स्वरूपों— राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक— ने मिलकर भारतीय राष्ट्रवाद की संपूर्ण अवधारणा को जन्म दिया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को गति दी और स्वतंत्र भारत के निर्माण के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का आंदोलन नहीं था, बल्कि एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया भी था।

आधुनिक भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अध्ययन की आवश्यकता

आधुनिक भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के अध्ययन की आवश्यकता इसलिए और अधिक प्रासंगिक हो जाती है क्योंकि आज राष्ट्र केवल राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों से ही नहीं जूझ रहा, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक संकटों और वैश्वीकरण से उत्पन्न सांस्कृतिक विघटन से भी प्रभावित हो रहा है। भारतीय समाज विविधता में एकता का प्रतीक है, किन्तु जातिवाद, धार्मिक कट्टरता, भाषाई भेदभाव और क्षेत्रीय असमानताओं जैसी समस्याएँ इसकी सामाजिक संरचना को कमजोर करती रही हैं। ऐसे में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि भारतीय राष्ट्र की आत्मा उसकी साझा सांस्कृतिक धरोहर, अध्यात्मिक परंपराओं और मानवीय मूल्यों में निहित है। यह अध्ययन राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक गर्व की भावना को पुनर्जीवित करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। साथ ही, वैश्वीकरण और पाश्चात्य उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव से जब भारतीय युवा अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं, तब सांस्कृतिक राष्ट्रवाद उन्हें अपनी सभ्यता और मूल्यों से जोड़कर संतुलित आधुनिकता की ओर अग्रसर कर सकता है । इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अध्ययन शिक्षा, राजनीति और समाज सुधार की नीतियों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने का कार्य करता है। यह न केवल स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि को समझने में मदद करता है, बल्कि आजादी के बाद राष्ट्रनिर्माण में भारतीयता की मूल अवधारणा को भी सशक्त करता है । स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, अरविंदो और अन्य चिंतकों ने जिस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को राष्ट्रीय उत्थान का आधार माना था, उसकी आवश्यकता आज के समय में और भी बढ़ गई है, क्योंकि यह राष्ट्र को आत्मनिर्भरता, आत्मगौरव और आत्मसंस्कृति की शक्ति से सशक्त बनाता है। आधुनिक भारत में बढ़ती भौतिक प्रतिस्पर्धा, मूल्य संकट और नैतिक पतन की स्थितियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अध्ययन युवाओं को सेवा, त्याग, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों से प्रेरित करता है। अतः सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अध्ययन केवल अतीत की ऐतिहासिक जिज्ञासा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक सशक्त मार्गदर्शन है, जो भारत को उसकी मौलिक पहचान और वैश्विक परिप्रेक्ष्य दोनों में सशक्त और प्रतिष्ठित बना सकता है।

साहित्य समीक्षा

सेन, ए. पी. (2017) [1]. स्वामी विवेकानंद के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को भारतीय राजनीतिक चिंतन की एक विशिष्ट धारा के रूप में प्रस्तुत किया गया है । विवेकानंद ने राष्ट्र की आत्मा को उसकी संस्कृति, अध्यात्म और मानवीय मूल्यों में निहित माना और यह प्रतिपादित किया कि भारत का उत्थान तभी संभव है जब वह अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़े रहते हुए आधुनिक प्रगति को आत्मसात करे । उनके विचारों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें शिक्षा, सामाजिक सुधार, सेवा और युवाओं की भूमिका का भी महत्त्वपूर्ण स्थान था । उन्होंने भारतीय समाज को उसकी विविधताओं के बीच एकता का बोध कराया और यह विश्वास दिलाया कि भारतीय संस्कृति विश्व को आध्यात्मिक दिशा देने में सक्षम है । इस प्रकार, विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय राजनीतिक विचारधारा को गहराई प्रदान करता है और राष्ट्र को आत्मबल, समरसता तथा आत्मगौरव की ओर प्रेरित करता है।

राउल, ए. के. (2013) [2]. स्वामी विवेकानंद को भारत को एक जीवंत और संगठित राष्ट्र के रूप में परिभाषित करने वाला महान चिंतक बताया है । उनके अनुसार, विवेकानंद के विचारों ने भारतीय समाज में नई राष्ट्रीय चेतना का संचार किया, जहाँ राष्ट्र केवल राजनीतिक सत्ता तक सीमित नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक बंधन से जुड़ा हुआ था । विवेकानंद ने युवाओं को राष्ट्र की शक्ति और भविष्य माना तथा शिक्षा और सेवा के माध्यम से उन्हें राष्ट्रनिर्माण के लिए तैयार करने का आह्वान किया। राउल का मानना है कि विवेकानंद ने भारत को केवल भौगोलिक इकाई न मानकर एक ऐसी सांस्कृतिक इकाई के रूप में स्थापित किया, जो अपनी परंपराओं, मूल्यों और अध्यात्म के बल पर विश्व को

मार्गदर्शन दे सकती है। इस दृष्टि से विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारत को एक सशक्त और आत्मगौरवपूर्ण राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करता है।

बेकरलेग, जी. (2006) [3] विवेकानंद के विचारों और संघ परिवार की राष्ट्रवाद संबंधी अवधारणाओं की तुलनात्मक पड़ताल की है। उन्होंने यह विश्लेषण किया कि दोनों दृष्टिकोण भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता और धार्मिक पहचान पर बल देते हैं, परंतु इनके केंद्र और स्वरूप अलग-अलग हैं । विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आध्यात्मिक सार्वभौमिकता और मानवता की सेवा पर आधारित है, जबकि संघ परिवार का राष्ट्रवाद धार्मिक-राजनीतिक संरचना और सामुदायिक पहचान पर अधिक केंद्रित है। बेकरलेग का तर्क है कि विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर मानवता के लिए प्रेरक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि संघ परिवार ने इसे राजनीतिक संगठन और जनसंख्या नीति से जोड़ा । इस प्रकार, अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि विवेकानंद का दृष्टिकोण व्यापक और समावेशी है, जो भारत की विविधताओं को एक सूत्र में बांधता है, जबकि संघ परिवार की सोच अपेक्षाकृत संकीर्ण और राजनीतिक है।

गोलवलकर, एम. एस. (2005) [4]. भारत की राष्ट्रीय पहचान हिंदू संस्कृति और परंपराओं में गहराई से निहित है, और इन्हें ही राष्ट्र की आत्मा के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। गोलवलकर का दृष्टिकोण विवेकानंद के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से कुछ हद तक मेल खाता है, क्योंकि दोनों ही भारतीय संस्कृति और अध्यात्म को राष्ट्र की नींव मानते हैं। किंतु गोलवलकर ने इसे हिंदू पहचान और पुरुषत्व से जोड़कर राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया, जबकि विवेकानंद ने इसे व्यापक मानवता और सार्वभौमिक आध्यात्मिकता से संबंधित माना । गोलवलकर का अध्ययन यह दर्शाता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा समय के साथ अलग-अलग संदर्भों में नए अर्थ ग्रहण करती रही है और समकालीन हिंदुत्व के विमर्श में इसका विशिष्ट स्थान है।

बैयर, के. (2019) [5]. स्वामी विवेकानंद को सुधारवादी हिंदू धर्म, राष्ट्रवाद और वैज्ञानिक योग से जोड़ते हुए उनकी आधुनिक प्रासंगिकता का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार, विवेकानंद ने धर्म को सामाजिक सुधार और वैज्ञानिक दृष्टि से जोड़कर प्रस्तुत किया, जिससे धर्म केवल आस्था का विषय न रहकर समाज सुधार और राष्ट्रीय उत्थान का साधन बना। उन्होंने योग और वेदांत को वैज्ञानिक आधार पर विश्व के सामने रखा और भारत की संस्कृति को आधुनिक युग के अनुरूप पुनर्परिभाषित किया । बैयर का मानना है कि विवेकानंद का राष्ट्रवाद धार्मिक कट्टरता से अलग होकर समावेशी और प्रगतिशील था, जिसमें शिक्षा, सेवा और मानवता की भलाई को सर्वोच्च स्थान मिला। इस प्रकार विवेकानंद ने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक विमर्श तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामाजिक सुधार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैश्विक आध्यात्मिकता से जोड़ा, जो आज भी प्रासंगिक है।

स्वामी विवेकानंद का जीवन और युगपरिप्रेक्ष्य

स्वामी विवेकानंद (1863–1902) का जीवन आधुनिक भारत के आध्यात्मिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय चेतना का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ और उनका बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। प्रारंभ से ही वे जिज्ञासु, तर्कशील और अध्यात्म के प्रति उत्सुक रहे। उनके जीवन पर विशेष प्रभाव उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस का पड़ा, जिनसे उन्होंने ईश्वर की सर्वव्यापकता और सेवा को धर्म का आधार माना। 1893 में शिकागो धर्म संसद में उनके ऐतिहासिक भाषण ने न केवल भारत को वैश्विक स्तर पर आध्यात्मिक गरिमा प्रदान की, बल्कि भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिकता और सहिष्णुता का संदेश पूरी दुनिया में फैलाया। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर शिक्षा, समाज सुधार, सेवा और राष्ट्रनिर्माण को अपना जीवन-लक्ष्य बनाया। 39 वर्ष की अल्पायु में 1902 में उनका निधन हो गया, किंतु उनके विचार आज भी भारतीय युवाओं और समाज को प्रेरित करते हैं।

उनके जीवनकाल का युगपरिप्रेक्ष्य भी उनके विचारों को समझने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 19वीं शताब्दी का भारत औपनिवेशिक दासता के अधीन था, जहाँ एक ओर ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने राजनीतिक शोषण और आर्थिक दमन से जनता को जकड़ रखा था, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज आंतरिक बुराइयों से ग्रसित था। जातिवाद, अस्पृश्यता, स्त्रियों की दयनीय स्थिति, धार्मिक अंधविश्वास और शिक्षा की कमी जैसी समस्याएँ समाज को कमजोर कर रही थीं। धार्मिक दृष्टि से भी उस समय हिंदू धर्म में अनेक कुरीतियाँ और बाह्याचार प्रचलित थे, जिनके कारण समाज में विघटन और हीनभावना फैल रही थी। इस पृष्ठभूमि में सुधार आंदोलनों की एक श्रृंखला शुरू हुई-राजा राममोहन राय का ब्रह्म समाज, दयानंद सरस्वती का आर्य समाज, ज्योतिबा फुले का सत्यशोधक आंदोलन और ईसाई मिशनरियों के सामाजिक कार्यों ने भारतीय समाज में नई चेतना जगाई । राजनीतिक स्तर पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन (1885) हुआ, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन की नींव रखी।

औपनिवेशिक भारत में धीरे-धीरे राष्ट्रीय चेतना का उदय हो रहा था, लेकिन यह चेतना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थी। भारतीयों को अपने गौरवशाली अतीत और सांस्कृतिक धरोहर की ओर लौटने की आवश्यकता थी। स्वामी विवेकानंद ने इसी आवश्यकता को पहचाना और राष्ट्र को बताया कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी आध्यात्मिकता और संस्कृति में निहित है। उन्होंने कहा कि यदि भारत को सशक्त बनाना है तो युवाओं को शिक्षा, आत्मबल और संगठन के मार्ग पर आगे बढ़ना होगा । उनके संदेश ने राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक आधार प्रदान किया और स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं को प्रेरणा दी। इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद का जीवन और युगपरिप्रेक्ष्य एक ऐसे दौर का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ भारत ने सांस्कृतिक जागरण, सामाजिक सुधार और राजनीतिक चेतना के समन्वय से राष्ट्रवाद की नींव रखी।

स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्रीय चेतना का एक गहन और व्यापक दृष्टिकोण है, जिसमें उन्होंने राष्ट्र की आत्मा को उसकी संस्कृति, अध्यात्म और आध्यात्मिक मूल्यों में निहित माना। विवेकानंद का मानना था कि भारत की असली शक्ति उसकी भौतिक प्रगति में नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिक परंपरा में है, जो न केवल भारतीय समाज को एक सूत्र में बांधती है बल्कि विश्व को भी दिशा प्रदान करती है । उन्होंने 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' की व्याख्या करते हुए कहा कि भारतीय राष्ट्र का आधार वेदांत की सार्वभौमिकता, मानव मात्र की सेवा और धार्मिक सहिष्णुता है। उनके अनुसार राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है जब जनता अपने गौरवशाली अतीत, परंपराओं और सांस्कृतिक चेतना को आत्मसात कर आगे बढ़े। विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति को पुनः जागृत कर उसमें निहित आत्मगौरव को प्रकट किया और इसे राष्ट्रीय उत्थान का सबसे बड़ा साधन बताया । वे मानते थे कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से राष्ट्र मजबूत नहीं बनता, जब तक कि जनता के जीवन में सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार न हो।

उनका सांस्कृतिक राष्ट्रवाद वेदांत दर्शन और अध्यात्म पर आधारित था। उन्होंने अद्वैत वेदांत की उस शिक्षा को राष्ट्रीय जीवन का मूल तत्व माना, जिसमें सभी जीवों में ईश्वर की समान सत्ता को स्वीकार किया गया है। इस दृष्टिकोण ने समाज में समानता, समरसता और सहिष्णुता की भावना को जन्म दिया। विवेकानंद ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारत का उत्थान तभी होगा जब वे धर्म और अध्यात्म के सार को जीवन में उतारकर राष्ट्र की सेवा करेंगे । उन्होंने अध्यात्म को केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं माना, बल्कि इसे कर्म, सेवा और मानव कल्याण से जोड़ा। उनके विचार में शिक्षा का उद्देश्य भी केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्रीय चेतना का विकास होना चाहिए। इस प्रकार वेदांत और अध्यात्म पर आधारित विवेकानंद का राष्ट्रवाद भारतीय समाज को आंतरिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास था।

स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान और गौरव दिलाया । 1893 में शिकागो विश्व धर्म संसद में उनके ऐतिहासिक भाषण ने भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता, सार्वभौमिकता और आध्यात्मिक श्रेष्ठता को विश्व के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि एक ऐसी सांस्कृतिक शक्ति है, जो मानवता को एक नई दिशा दे

सकती है। उनके विचारों ने विश्व को यह संदेश दिया कि भारतीय संस्कृति केवल भारत की धरोहर नहीं है, बल्कि पूरी मानवता के कल्याण का मार्ग है। इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक गहराई और वैश्विक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है, जो न केवल भारत के लिए बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणास्रोत है।

आधुनिक भारत पर प्रभाव

स्वामी विवेकानंद का आधुनिक भारत पर प्रभाव अत्यंत गहरा और व्यापक है, जिसने स्वतंत्रता संग्राम से लेकर राष्ट्रनिर्माण तक भारतीय समाज और राजनीति को दिशा दी। उनके विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम के राष्ट्रवादी नेताओं को नई दृष्टि और प्रेरणा प्रदान की। महात्मा गांधी ने स्वीकार किया कि विवेकानंद के लेखन और भाषणों ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया और उनमें सेवा, आत्मबल तथा आत्मनिर्भरता की भावना जागृत की। अरविंदो ने विवेकानंद को भारत की आध्यात्मिक शक्ति का प्रतिनिधि माना और उनके राष्ट्रवाद को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आधार बताया। सुभाष चंद्र बोस भी विवेकानंद से गहराई से प्रेरित हुए और उन्होंने युवाओं में संगठन, साहस और बलिदान की भावना जगाने में विवेकानंद को आदर्श माना। इस प्रकार विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुआ। शिक्षा, समाज सुधार और धार्मिक एकता के क्षेत्र में भी उनका योगदान अमूल्य है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मबल और राष्ट्र सेवा का उपकरण माना। रामकृष्ण मिशन के माध्यम से उन्होंने शिक्षा और सेवा कार्यों को व्यापक रूप दिया, जिसने समाज में जागरूकता और आत्मविश्वास पैदा किया। उन्होंने जाति, पंथ और धर्म के आधार पर बँटे समाज को यह संदेश दिया कि सभी धर्म सत्य की ओर ले जाते हैं और उनका उद्देश्य मानवता की सेवा है। इस विचार ने धार्मिक एकता और सहिष्णुता की नींव रखी। समाज सुधार के क्षेत्र में विवेकानंद ने विशेष रूप से युवाओं और स्त्रियों को जागरूक करने पर बल दिया और उन्हें राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग माना। आधुनिक भारत के राष्ट्रनिर्माण में विवेकानंद के विचार आज भी अत्यंत उपयोगी हैं। उनका सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल अतीत के गौरव को पुनर्जीवित करने तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें आधुनिक भारत के विकास का दृष्टिकोण भी था। उन्होंने आत्मनिर्भरता, आत्मगौरव, शिक्षा सुधार, सामाजिक समरसता और वैश्विक मानवीय मूल्यों को राष्ट्रीय जीवन का आधार बनाने पर बल दिया। आज जब भारत वैश्वीकरण, सांस्कृतिक चुनौतियों और सामाजिक असमानताओं से जूझ रहा है, तब विवेकानंद के विचार राष्ट्रीय एकता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की ओर लौटने की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद का प्रभाव आधुनिक भारत के हर क्षेत्र-स्वतंत्रता आंदोलन, शिक्षा, समाज सुधार, धार्मिक सहिष्णुता और राष्ट्रनिर्माण में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है और वह आज भी भारत के भविष्य को दिशा देने में सहायक है।

निष्कर्ष

आधुनिक भारत में स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक ऐसी वैचारिक धारा है, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक गहराई और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। विवेकानंद का मानना था कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी भौतिक संपन्नता में नहीं, बल्कि उसकी संस्कृति, परंपरा और अध्यात्म में निहित है। उन्होंने राष्ट्र को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे शिक्षा, सेवा, सामाजिक समरसता और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित एक समग्र दृष्टिकोण से परिभाषित किया। उनके विचारों ने स्वतंत्रता संग्राम के अनेक नेताओं को प्रेरित किया और भारत के सांस्कृतिक गौरव को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने युवाओं को राष्ट्रनिर्माण की धुरी मानते हुए शिक्षा और आत्मबल के माध्यम से सशक्त बनाने पर बल दिया। साथ ही, उन्होंने सेवा और संगठन की शक्ति को राष्ट्रीय उत्थान का साधन बताया। आज जब भारत सामाजिक असमानताओं, सांस्कृतिक विघटन और वैश्वीकरण की चुनौतियों से जूझ रहा है, तब विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद नई दिशा प्रदान करता है। उनके विचार हमें यह सिखाते हैं कि राष्ट्र की एकता और प्रगति तभी संभव है जब हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़े रहें और मानवता, सहिष्णुता तथा सेवा जैसे मूल्यों को जीवन में उतारें। आधुनिक भारत में विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद न केवल राष्ट्रीय अस्मिता को मजबूत करता है, बल्कि वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी भारत की एक विशिष्ट पहचान स्थापित करता है। इस प्रकार, यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद आज भी भारतीय समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक है, जो हमें आत्मगौरव के साथ आधुनिक विकास की ओर अग्रसर होने की शक्ति प्रदान करता है।

संदर्भ

1. सेन, ए. पी. (2017). विवेकानंद: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद। भारतीय राजनीतिक विचार, 220.
2. राउल, ए. के. (2013). स्वामी विवेकानंद भारत एक राष्ट्र के रूप में। आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 9(3).
3. बेकरलेग, जी. (2006). स्वामी विवेकानंद और संघ परिवार: जनसंख्या, धर्म और राष्ट्रीय पहचान पर अभिसारी या भिन्न राय?. उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन, 9(2), 121-135.
4. गोलवलकर, एम. एस. (2005). सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, पुरुषवादी हिंदू धर्म और समकालीन हिंदुत्व। मुझे पुरुष बनाओ!: भारत में पुरुषत्व, हिंदू धर्म और राष्ट्रवाद, 75.
5. बैयर, के. (2019). स्वामी विवेकानंद. सुधारवादी हिंदू धर्म, राष्ट्रवाद और वैज्ञानिक योग। समकालीन समाज में धर्म और परिवर्तन पर अंतःविषय पत्रिका, 5(1), 230-257।
6. मेधानंद, एस. (2020)। क्या स्वामी विवेकानंद एक हिंदू वर्चस्ववादी थे? एक लंबे समय से चली आ रही बहस पर पुनर्विचार। धर्म, 11(7), 368।
7. भुयान, पी. आर. (2003)। स्वामी विवेकानंद: पुनरुत्थानशील भारत के मसीहा। अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिक्ट।
8. वेलासेरी, एस. (2021). विवेकानंद का सामाजिक दर्शन और भारतीय राष्ट्रवाद। ब्राउन वॉकर प्रेस।
9. बनर्जी, एच. (2006). भारत को हिंदू और पुरुष बनाना: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और समकालीन भारत में जातीय नागरिक का उदय। एथ्निसिटीज़, 6(3), 362-390।
10. शिवकुमार, एम. वी. (2013). भारत के राष्ट्रीय एकीकरण में स्वामी विवेकानंद का योगदान (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टायम, केरल, भारत)। http://hdl.handel.net/10603/7074)।
11. तिवारी, ए. के. (2019). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान राष्ट्रवाद पर विमर्श। ईपीआरए इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 4(1)।
12. कुमार, एस. (2019). साहित्य में राष्ट्रवाद। संपादकीय बोर्ड, 68.
13. सिल, एन. पी. (2004). स्वामी विवेकानंद और ऋषि बंकिमचंद्र देशभक्त और राष्ट्रवादी के रूप में: एक आलोचनात्मक तुलना। ईस्ट-वेस्ट कनेक्शन्स: रिव्यू ऑफ एशियन स्टडीज, 4(1), 147-171.
14. सरकार, एम. सी. (2021). स्वामी विवेकानंद के व्यावहारिक वेदांत दर्शन की अवधारणा और मानव विकास: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च, 1(5), 17-20.
15. कुमार, एस. (2016). भारतीय साहित्य में हिंदू राष्ट्रवाद। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज स्टडीज, 3(1), 62-69.
16. चक्रवर्ती, ए. (2019). समकालीन भारत में हिंसा, धर्म और पुरुषवाद: विवेकानंद, गोलवलकर और गांधी के लेखन का विश्लेषण (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, डबलिन सिटी यूनिवर्सिटी)।